

आशा नरकदासि

2117

ASHA ARCHIVES

॥ भा. स्व. ॥

॥ १ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ प्रणम्य चादौ गणनायकं चरुशतमजं विष्णुविनासनं च ॥ संक्षपतो लोकहि
तायवक्षे कुवादि तो भास्वतिनाममुत्रम् ॥ नत्वा मुण्डरे चरणारविदं श्रीमान्स तान च इति प्रसिद्ध
तां भास्वतिसिष्यहितार्थमाह शाके विहिने सशिपक्षरैवैकै ॥ १०२२ ॥ शाको नवादि ३ कसानु ॥ ३२
॥ ७९ ॥ युक्तकले भवत्याह गणात्कले बी ॥ ययं न भो लोचनदेव हि न ॥ ४२०० ॥ शास्त्राह पिडका वि
तसयैव ॥ अथ प्रवक्षे मिहिरोपदेशात् सूर्यसिद्धान्तसमासात् ॥ शास्त्राह पिडस्वरसुच्यदिष्ट
॥ १००० ॥ स्तानाग्नीषु ॥ ३४९ ॥ कथसहै ॥ ८०० ॥ विभक्ता ॥ ४ ॥ लघ्नं न गैसे ॥ ७ ॥ पितृमंगयुक्तसूर्यादि
संवत्सरपालकस्यात् ॥ सेषं हरे पोष्य ॥ ८०० ॥ पृथक् गजासा ॥ १००० ॥ लघ्नं न वेत्त्यको कुवस्यात्

॥ ए. म. ॥

॥ १ ॥

॥ ५ ॥ सहस्र ॥ १००० ॥ निघ्न षविधुनि ॥ १० ॥ तोषसिद्ध ॥ २४४ ॥ भागो नभचक्रसेष ॥ २००० ॥ षपंच ॥ ५०
संयुक्तैरसं ॥ १०० ॥ सुसुकेचडा ॥ १० ॥ भागो जदिक शशांक ॥ ५० ॥ ११ ॥ हुतो वेद ॥ ४ ॥ पुनस्त्रि ॥ ४२ ॥ वेदः शे
षचतु ॥ ६४ ॥ षष्टिः गुणो रदा ॥ ३२ ॥ १० ॥ मृधकरवरा ॥ १००० ॥ गाम्पुतेनु केके अष्टाष्ट ॥ ८ ॥ भागो रदन
षांस ॥ २० ॥ युक्त ॥ ६ ॥ केदात्भव ॥ ११ ॥ द्यादिपुनेत्र ॥ १२५ ॥ चडैर्लघ्नितो मध्यविधुस्त्यात् ॥ भवक
॥ २००० ॥ सेषखरा ॥ ९० ॥ बाप्रभागे शौकोर्कसंक्रांतिथिस्तु सेष ॥ १० ॥ पातसर ॥ ५ ॥ योगिने ॥ २० ॥ नयुक्त
स्त्रिनर ॥ ९३ ॥ सेषोगगतांग ॥ ६० ॥ निघ्न ॥ द्विदिदरामा ॥ ३१ ॥ प्रषराम ॥ २० ॥ हिनः सांशो हृन्दात्युतरं
ग ॥ १६ ॥ चडै ॥ २० ॥ तनदसे ॥ ९३ ॥ मयदिशु न्यके स्यात्वर ॥ ३० ॥ महीनखरवेद ॥ ५००० ॥ पंच ॥ कार्ये

॥ भास्व ॥
॥ २ ॥

स्तदा चंद्रसमस्तपात ॥ शांशो हवरात्पुनरं ॥ १६ ॥ गचडै ॥ ९ ॥ अवन्ति देसाद्युत योजसा ॥ ५८ ॥ निसं
पुण्यवारौ ॥ ५ ॥ रस ॥ ६ ॥ भाजितानी ॥ २६५ ॥ हिनाधिकामंगः नरेव च ॥ २० ॥ ६ ॥ कुर्यात्कायाकवेदे फल
मंगुलाणि ॥ १० ॥ स्वदेशजाया विषुवत्पमा स्यात्पंचर्तुदस्वांतरिता गतिः ॥ शतेन ॥ १०० ॥ भक्तं भ
वति हलधुः देशांतरं सुर्याशशांककेडै ॥ ११ ॥ रवेस ॥ ० ॥ ७ ॥ प्रकलाभुक्तिषनं ॥ २० ॥ दण्डविधो स्मृता
सत ॥ १०० ॥ केडस्य वैभुक्तिराहुश्च षजि ॥ ० ॥ २४ ॥ नागति ॥ १२ ॥ इति श्रीसदानंदविरचिते भास्व
तिकरणेतिथिप्रकाशे धिकारपथ ॥ १ ॥ शास्त्रादिसौराहगरात्कलेर्वावर्षार्धिणा सप्तः हतादिसे
षा ॥ शुके ॥ १ ॥ दु ॥ २ ॥ वाचस्यति ॥ ३ ॥ सुर्य ॥ २४ ॥ सौम्य ॥ ५ ॥ शनै ॥ ६ ॥ श्व ॥ ७ ॥ एराः क्रम ॥ २ ॥

॥ रामः ॥
॥ २ ॥

सोभवंति॥११॥शाकोनवा॥३९०९॥डिउकसानुयुक्तः कलेर्मवनेहः गनालुहृतः॥वेयेन्नभो लो
चनवेहिनः॥शास्त्रादपिंडकथितसयेव॥२॥अहर्कनिघोरविमासयुक्तसप्ता॥७॥वसेषरवि
मासनाथाः॥ज्ञातुक्रसूर्यारसुरेज्यसौर चंडाक्रमा॥६॥सावनमासतोत्पे॥३॥अदृष्टकखेस
॥११०॥गुरोसरगा॥९३७५॥रामांकुडियचंड॥१५॥युक्तः॥तत्पदी॥६॥सेषादिषुभिर्गुणा
निलज्जानिशेषैर्गिरिसशमासु॥४॥अदेषेसगुरो॥११०॥देयापचचंडेपुलोचना॥२५१५॥भा
स्वतिकरणेयोक्तासंमितीमहिरोदिता॥४॥शास्त्रादपिरोशवसुवह्निषट्॥६३८॥धैसशितर
म्पिज्वलनो॥३९॥महिजे॥सताहतोद्वादशरासिचक्रे॥१२००॥सेषेद्विवारौ॥५४॥ध्वपुतोवह

भास्व ॥
॥ ३ ॥

शत ॥ ५ ॥ सोचंषयाधि २०० ॥ ध्रुमधोदस ॥ १० ॥ प्र तिथि ॥ ११५ ॥ लङ्गांगरसाधि ॥ २६६ ॥ हीन
सता ॥ १०० ॥ हतोधधनवा ॥ ९० ॥ तनेत्रसूर्या ॥ १२२ ॥ द्यजिवोदनधां ॥ २० ॥ सयुक्त ॥ ६ ॥ पेषुस्वर ॥
७५० ॥ घोंकसरग्नि ॥ ३५९ ॥ युक्तसितोच्चमाळं कुट्टपै ॥ १६९ ॥ सत ॥ १०० ॥ षवेद ॥ ४० ॥ निघोधि
नवेपु ॥ ५९४ ॥ युक्तसनिदश ॥ १० ॥ घ्रात्सहितश्चसत्रौ ॥ १४ ॥ भौमाद्याग्निरसापलौका ॥ ६३८ ॥ १ ॥
सहिताः शवाङ्गनागेन्दवः सप्तान्नि ॥ १८२ ॥ ३० ॥ प्रयुतागुरैससिदिसौनदा ॥ १०१ ॥ ९ ॥ नितोवै
ध्रुवे ॥ शकेद्योमसराद्योगगुणा ॥ ७५० ॥ ३० ॥ युतोसौरिषवेदापलेलोकाधि ॥ ४० ॥ ४३ ॥ षनव
र्द्धयेजिन ॥ २९ ॥ २४ ॥ युतागहोर्गतेवत्सरे ॥ ८ ॥ सकाद्येगुणितोशमै ॥ ३ ॥ भु ॥ १ ॥ मिश्रोमुनिनाह

॥ राम ॥
॥ ३ ॥

त॥ रव्यादि क्रम तो राजा मंत्रितस्य चतुर्थक ॥ ९ ॥ साकं रसानि ॥ ३६ ॥ संयुक्तौ वशुभि ॥ ८ ॥ भागमा
हरेत् ॥ अनंतादि क्रमेनैव अथौ नागा प्रकिर्तिता ॥ १० ॥ अनंतो बासुकिः पयोः महापद्मः श्वन
क्षक ॥ कलिर ॥ कर्कोटक ० सषो ॥ अथौ नागा प्रकिर्तिता ॥ ११ ॥ साकं सशांक ॥ १ ॥ संयुक्तौ मुनि ॥ ७ ॥
भिर्भागहारिता ॥ आवहादि क्रमेनैव सप्तवात्ता प्रकिर्तिता ॥ १२ ॥ आवहः प्रवहः प्वैव संभवो ॥ वि
वहस्तथा उदहो ॥ निवहो ॥ वायु ० सप्तवार्ता प्रकिर्तिता ॥ १३ ॥ शाकं सराग्नी ॥ ३५ ॥ संयुक्तौ वेदे ॥ ४ ॥
नैव वसेषितम् ॥ आवर्तवर्द्धि संवर्त्त पुकरे ॥ डोरा मस्तुदं ॥ १४ ॥ आवर्त्त निर्जलो मेघः संवर्त्त वायु
पुरक ॥ पुकरेडः करुष्टि डोरो मस्तुवति महि ॥ १५ ॥ पुग्मा ॥ ३ ॥ ज ॥ १ ॥ गो ॥ २ ॥ मिन ॥ १२ ॥ गतेश सां

॥ भास्वः ॥

॥ ४ ॥

के. रविर्यदाकर्कटसं प्रयाति जलं सता ॥ १०० ॥ ह्यं हरि ॥ ५ ॥ कार्मुके ॥ ९ ॥ ईमुक्तं ॥ ५० ॥ हिकं न्याः ॥
॥ ६ ॥ मृग ॥ १० ॥ पौरसिति ॥ ८० ॥ कलिर ॥ ४ ॥ कुंभा ॥ ११ ॥ लि ॥ ८ ॥ तुला ॥ ७ ॥ गते दौ बुजे द्विषं नवति
॥ ९६ ॥ सदानि ॥ १६ ॥ समुडेदस ॥ १० ॥ भागाश्च षट् ॥ ६ ॥ भागाश्चैव पर्वते विधिष्यां चतुरे ॥ ४ ॥
भागो सौम्येव कर्षः तिवासव ॥ १७ ॥ दस योजन विस्तिर्गशत योजन मायुतं ॥ आठ कंतु विजानियाय
न वर्ष तिवासव ॥ १८ ॥ गुरो न ॥ ३ ॥ गुरो तं शासत् ॥ भिगमा हरेत् सेषं जिमा ॥ २ ॥ हतं हत्वा पंच ॥ ५ ॥
तत्रानियोजयेत् ॥ १९ ॥ यथा शाकस्तथालक्ष्यः सेषः पूर्व सेषवत् ॥ मेघो धान्यत्रिणः चैवः सित
रैः सविरणं ॥ २० ॥ प्रजानां च जथा वृद्धि क्षपौ च नृपविग्रह ॥ एतेन वस माघाता येवं साका घ

॥ एमः ॥

॥ ४ ॥

तोमु० ॥ २१ ॥ शाकोवेदै ॥ ४ ॥ अगुणितं पर्वतै ॥ ७ ॥ भागमाहरत् ॥ २ ॥ घोरुप ॥ १ ॥ नसंयोपंश्रुधा
घाक्रमसोभवेत् ॥ २२ ॥ क्षुधा० त्रिषा० तथा निंदा० आलस्य० घमपंचक० सान्नि० क्रोध० दंभ
० लोभ० उत्साह० अतथोदस ॥ २३ ॥ निरसो० गोरसो० अथैवपापं० पुन्य० चतुर्दस ॥ विक्रमा
कनृपकालमग्निमि ॥ ३ ॥ सप्तगुणविषयैश्च ॥ ५ ॥ समंवितं ॥ अदि ॥ ७ ॥ सेषमवलोक्य संवदेत्
चैव नितं शुभाशुभं ॥ २४ ॥ अग्नि ॥ २ ॥ वेद ॥ ४ ॥ सर ॥ ५ ॥ वह्नि ॥ ३ ॥ भिमहजायेतेषु शुभि
क्षत्रमं ॥ षड्दि ॥ ६ ॥ एतविधुरपयोधरं चन्द्रगोपतिभयं महत् ॥ २५ ॥ इति श्रीसदानन्दश्वा
र्यविरचिते भास्वति ह्करोगग्रहकुवदिकारदितियोध्याय ॥ २ ॥ विस ॥ ३० ॥ कुणामेषमुष्वा

॥ भास्व ॥

॥ ५ ॥

क मासादिनैसमेतारितुवासरोरा ॥ विहृन्दमेतन्नग ॥ ७ ॥ भक्तशेषंवारुभवन्त्यादमुखवाद्युनाथा ॥

॥ १ ॥ चडो ॥ १ ॥ श्वि ॥ २ ॥ वहि ॥ ३ ॥ उग ॥ ४ ॥ भुत ॥ ५ ॥ रसा ॥ ६ ॥ श्व ॥ ७ ॥ तर्क ॥ ८ ॥ पट ॥ ९ ॥ वारा ॥ ५ ॥ भुत ॥ ५ ॥

विषया ॥ ५ ॥ पथाक्रमेण मेषादिरासिषुषणम ॥ ३० ॥ गुरोषुदेयाभुक्तांसकैश्चसहितांभव

तुहृन्दत् ॥ २ ॥ सूर्यस्वर ॥ ७ ॥ चास्तिथपप्रदेयाप्रिथकसता ॥ १००० ॥ त्राक्रमसश्चषण्डा ॥ शेषाश्च

भुक्तोनिनभोग्यनिघुसता ॥ १००० ॥ सुक्तोभधिकस्फुतस्यात् ॥ ३ ॥ सूर्यस्यपंचां ॥ ५ ॥ क ॥ ९ ॥

रवि ॥ १२ ॥ च ॥ १४ ॥ भुषा ॥ १६ ॥ घना ॥ १७ ॥ नवेद ॥ १९ ॥ ऊजिमा ॥ २१ ॥ जिना ॥ २४ ॥ श्व ॥ ३ ॥ सप्ताश्वि ॥ ४ ॥

॥ २० ॥ ताश्चंद्रगुणा ॥ २१ ॥ रसाग्नि ॥ २२ ॥ घञि ॥ ४२ ॥ श्वताना ॥ ४९ ॥ दिसरा ॥ ५७ ॥ सरांजा ॥ ६५ ॥

॥ राम ॥

॥ ५ ॥

^{१७}॥४॥ पचांडयो ॥ ^{१८}५॥ वेदगजा ॥ ^{१९}६॥ कृतांत्या ॥ ^{२०}७॥ त्रिषेदवो ॥ ^{२१}८॥ भानुभुव ॥ ^{२२}९॥ कसुर्या ॥ ^{२३}१०॥ अष्टाभिचडा ॥ ^{२४}११॥ सरशमचडा ॥ ^{२५}१२॥ श्वंदाभिचडा ॥ ^{२६}१३॥ सरवजिनं ॥ ^{२७}१४॥ श्व ॥ ^{२८}१५॥ यो ॥ ^{२९}१॥ नंदुंगुणं कृत्वा तद्वोजन्म कालिकि ॥ ^{३०}सुर्यादयादिद्यटिकाविलिषेचचषापुन ॥ ^{३१}स्वक्तमा
 र्गस्फुटं कुर्यात् ॥ ^{३२}ग्रहस्तात्कालिको भवेत् ॥ ^{३३}६॥ भोग्यादवेसप्त ॥ ^{३४}७॥ गुणास्तुता ॥ ^{३५}१००॥ प्रसप्ता ॥ ^{३६}७॥ नि
 तस्यास्फुटसुर्यभुक्तिखन ॥ ^{३७}८॥ निघ्रातिथयः शसांकेः केडेसत ॥ ^{३८}१००॥ घ्रातिथयः प्रदेया
 ॥ ^{३९}७॥ केडेकमाषदूसरसप्तदशैः ॥ ^{४०}५६॥ लोधाविधोस्यागसराधिनेचैः ॥ ^{४१}२४५॥ ईदुद्विहदा
 त्सहितखसुर्ये ॥ ^{४२}१२०॥ श्वराश्वभागोनगुतश्वमार्धात् ॥ ^{४३}८॥ श्वराश्वभागविषुवादिमासैखं ०

॥ भास्वः ॥

॥ ६ ॥ ०

चंद्र ॥ १ ॥ नेत्र ॥ २ ॥ दय ॥ २ ॥ चन्द्र ॥ खां ० सा ॥ पुनः ॥ सुहृदात् गगणेषु ॥ ५ ॥ तपः ॥ सितांशके अत्रुयुतं
कुर्यात् ॥ ६ ॥ तत्पुत्रहंसः सत ॥ १०० ॥ तत्त्वरंसाडाभोग्यो ज्वंशाश्च धनं ॥ १ ॥ डो ॥ १ ॥ रुपा
॥ १ ॥ नि ॥ ३ ॥ रसा ॥ ४ ॥ खचन्द्रा ॥ १० ॥ नृपा ॥ १६ ॥ जिना ॥ २४ ॥ पंचगुरा ॥ ३५ ॥ रसाग्नि ॥ ४६ ॥ पृष्टि ॥ ६०
सरागा ॥ ७५ ॥ कृतवा ॥ ९१ ॥ मुकाष्टा ॥ १०८ ॥ षड्ज्ञानवो ॥ १२६ ॥ राममनु ॥ १४३ ॥ नवाह ॥ १५९ ॥ पं
चांमुदां ॥ १७५ ॥ खांकमुवो ॥ १९० ॥ द्विषाग्नि ॥ २०२ ॥ विस्वाग्नि ॥ २१३ ॥ जात्याग्नि ॥ २२३ ॥ खरामद
आ ॥ २३० ॥ पंचाग्नि ॥ २३५ ॥ गोलियमा ॥ २३९ ॥ कुसिद्धा ॥ २४५ ॥ नेत्राग्नि ॥ २४२ ॥ वह्निजि
ना ॥ २४३ ॥ त्रिसिद्धा ॥ २४३ ॥ १२ ॥ मुक्तिर्नवात्पा ॥ ९० ॥ न्वितभोग्यमिन्दोरको नचडातिथयः खनं

॥ रासः ॥

॥ ६ ॥

रै॥९०॥सेषोनषांका॥९०॥गगणांग॥६२॥निघुभुक्तांतरा॥६३॥प्रायदिकाभवन्ति॥सताप्तः॥
॥१००॥मृक्षंशत॥१००॥मोषितांशाषष्ट्या॥६०॥हताभुक्ति॥९०॥हताप्रनाद्या॥१३॥राशिःससां
काच्छरजाति॥२२५॥लज्जंनक्षत्रप्रेतत्॥यदिकाश्चरोषा॥एवंरविदोऽतितत्त्वयोगाःसताः॥
विताचन्द्रगतिस्तु॥९१॥हार॥१४॥अर्कोनचन्द्राश्चसराश्चि॥४५॥हीनततोवसिष्टाश्चसरा
श्चि॥४५॥लज्जं॥सप्ता॥७॥वशेषंकरणं बवाद्यंतत्रादिकायांतिथिवत्भवन्ति॥१५॥परेदले
कृष्णचतुर्दसिचतिथ्यर्द्धभोगासकृन्निचतुष्पात्॥नागंश्चकिंस्तुघुमितिक्रमेनै॥चत्वारि
विंशत्करणाणिनित्यं॥१६॥दिनेदिनेहर्गणारूप॥१॥युक्तसप्तै॥७॥वसुर्येवरवनन्द॥९०॥

॥ भास्व ॥

॥ ७ ॥

मिन्दौ ॥ खरेवेन्द ॥ १०० ॥ केन्द्रेतिपुतं प्रकुर्यात् प्राग्वत्स्फटिकार्यमिति प्रशाभ्य ॥ १० ॥ इति श्रीस
दानन्दविरचिते भास्वति ह्करणेतिथि नक्षत्राद्या नपनाधिकारत्रियोक्तायो ॥ ३ ॥ भौमश्वर
प्रादिगुणाकृता ॥ ४ ॥ तं पुनः ॥ द्विहृदात्त्रिसता ॥ ३०० ॥ प्रहीन ॥ अष्टाष्ट ॥ ८८ ॥ शेषखरखर
म ॥ ३०० ॥ निद्युपदक्ष्याक्षिभि ॥ २२ ॥ सोमसतस्यसिधुं ॥ १ ॥ गुरुगुण ॥ ३ ॥ घ्राद्युगणादसा ॥ १० ॥
पुंवेरादि ॥ ४४ ॥ मिलज्जविवर्जितश्च ॥ वेदा ॥ ४ ॥ हतो धगुणभाग ॥ ३ ॥ पुक्तसितस्यसिधुं
सहितखसकै ॥ १४० ॥ २१ ॥ सनिघुहृदात्तव ॥ ९ ॥ भक्तलपुं कुवाचितारगुदपश्चमध्या
त् ॥ भवन्ति जीवा जर्कजभुमिपुत्रास्तभार्गवो शिष्यगतिर्भवेतां ॥ ३ ॥ दिष्टा ॥ १० ॥ घने ॥ १० ॥ ना

रामः

॥ ७ ॥

नृसुखं नख नगां ॥ ७ ॥ सही नवि ॥ ३ ॥ भिद्गुजोर्किं कुजे न्यसिधुं ॥ अष्टे ॥ ८०० ॥ पु ॥ ५०० ॥
षट् ॥ ६० ॥ नन्द ॥ ९०० ॥ चतु ॥ ४०० ॥ सताय्य पृथक्कृष्टा षट् भवतैष्य केन्द ॥ ४ ॥ रुद्रा ॥ ११ ॥ न
वेड ॥ १९ ॥ द्विप्रमा ॥ २२ ॥ तवेन्द ॥ १९ ॥ रुद्रा ॥ ११ ॥ श्वभोग्योऽवयुक्त हीन ॥ घना ॥ १० ॥ ग ॥ ७ ॥
नाग ॥ ८ ॥ चप ॥ ३ ॥ सुर्य ॥ १२ ॥ निघ्न दक्षो ॥ १० ॥ छतहि न धन चं मद्य ॥ ५ ॥ पृथक् स्वशिष्यो
नित केन्दु घडभा ॥ ६०० ॥ विघ्नात् स्वशीधोन युतस्फुट स्यात् ॥ पंचराशिस्थितो पत्रवि ॥ ३ ॥
युस्तत्रैव कारयेत् ॥ ६ ॥ यहा श्वशिष्यो नित काये दा स्याद्विरोधने वासर ॥ ५ ॥ राशिसंख्या
राशिविनां कां नू वि ॥ ३ ॥ गुणात् प्रकुर्यात् दानतः शिष्य फल प्रसाध ॥ ७ ॥ भौम सखाधि ॥ ४० ॥

॥ भास्वः ॥
॥ ८ ॥

नगसप्त ॥ ७७ ॥ खेशा ॥ ११० ॥ देवेष्ट ॥ १३३ ॥ जातीन्दु ॥ १२२ ॥ गगो ॥ ९७ ॥ नगार्था ॥ ५७ ॥ जतिन्हा ॥ २७ ॥
॥ मन्निषु ॥ ५३ ॥ कुंसप्त ॥ ७९ ॥ षट्स्वरा ॥ ७६ ॥ त्रिपंच ॥ ५३ ॥ सप्ताग्नि ॥ नवेन्दु ॥ १९ ॥ त्रिस्मृत ॥ ८ ॥
गुरेन्द्रपा ॥ १६ ॥ खानि ॥ ३० ॥ गजत्रपंच ॥ ३८ ॥ षट्बंधयो ॥ ३६ ॥ रामजिमा ॥ २३ ॥ नृपां ॥ ९ ॥
॥ ८ ॥ कां ॥ ९ ॥ भृगो द्विवेदा ॥ ४२ ॥ कुगजा ॥ ८९ ॥ खसुर्या ॥ १२० ॥ योमाहु ॥ १५० ॥ नागेष्ट
॥ १४८ ॥ भभु ॥ १२७ ॥ त्रि शैला ॥ ७३ ॥ शनेदिशो ॥ १० ॥ द्वा ॥ ५७ ॥ कुप्रमा ॥ २९ ॥ नवेन्दु ॥ १९ ॥ द्वि
प्र ॥ १२ ॥ मयोमंगज ॥ ८ ॥ मद् ॥ ४ ॥ पद्म ॥ ८ ॥ खेस्वरुषं ॥ ७१० ॥ नवतिख ॥ ९० ॥ १० ॥ मिंशैकेडे श
तांभु ॥ १०९ ॥ तमसरवसिद्धौ ॥ ० ॥ २४ ॥ पादौ नद् ॥ १४५ ॥ ग्रामयनौ ॥ ३ ॥ ११ ॥ खमेद्यौ ॥ ० ॥ १७ ॥

रामः
॥ ८ ॥

अद्वै॥३॥५॥खसप्ता॥०७॥वनिजदिकानां॥९॥त्रयोघना॥३॥१०॥विस्वर्षभागपञ्च॥१३॥
३८॥त्रयोघना॥३॥१०॥पंचनया॥५॥२०॥गुणाष्टा॥३॥१०॥ज्जादिसीधुं स्यचमुक्तपञ्चरुक्त
स्मृतासैर्गणितः प्रमिनै॥१०॥घना॥५०॥ग॥७॥नाग॥८॥त्रि॥३॥रवि॥१२॥प्रभुक्तिभोग्या
हतायाखशता॥१००॥तदप्रं ऊनेतुखरोऽसहितोन्यथानामन्दस्फटाभुक्तिरियंज्जादे
॥११॥मन्दस्फटाशीधुंगतौविसोध्यः प्राग्वत्किताभोग्यहताशता॥१००॥प्रावजुल्यभो
ग्योस्वमृणयथास्यामन्कादिचारेविपरितशोधा॥१२॥मादिकृत॥४॥प्रोक्त॥९॥तोय
हासुरास्यादिरांकै॥९॥गुणितकृता॥४॥प्र॥मादिभवंनादिपुराशिहारसराकृतिः॥२५

॥ भास्व ॥
॥ ९ ॥

रासिमुषेसतं ॥ १०० ॥ च ॥ १३ ॥ विस्वा ॥ १३ ॥ श्वि ॥ २ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ दसा ॥ १० ॥ ग ॥ ६ ॥ मासैश्च क्रा
र्द्धः केडासितिनादिपुष्टं ॥ १८ ॥ द्वादस ॥ १२ ॥ रासि ॥ १२ ॥ भार्या ॥ ५७ ॥ वेदाश्चिनो ॥ २
४ ॥ सप्त ॥ ७ ॥ रसा ॥ ६ ॥ क्रमेणो ॥ १४ ॥ स्वसिधंकेडस्यनुमराउलाह्रापूर्वापरावक्रकवासरास्य ॥ ७
ष्ट्या ॥ ६० ॥ श्वि ॥ ८ ॥ भुषां ॥ १६ ॥ कगुरा ॥ ३ ॥ कुदश्रा ॥ २१ ॥ चक्रोदितप्राकरपोस्तगस्यात् ॥ एवं
ज्ञभृगोवश्र ॥ ८ ॥ पंच ॥ ५ ॥ षड्रागो नषेरापरतोषिकोर्कात् ॥ १५ ॥ भौमोगच्छतिवक्रितासुचि
सरासैश्च ॥ ६५३ ॥ साद्योनितेतद्वच्चंदुमुतत्रयोदसमुनै ॥ ७१३ ॥ जीवोरिषट्पर्वतै ॥ ७६६ ॥
शुक्लेखेपुरसे ॥ ६५० ॥ खराशुतनषोवह्निनुनागे ॥ ८१३ ॥ पुनः कौटिह्यं परिहृत्य पुष्करगति

॥ रामः ॥

॥ ९ ॥

॥ १२० ॥ मार्गिभवेच्छेदिते ॥ १६ ॥ भौमास्तंदहनग्रहे ॥ १२ ॥ स्वजलधे ॥ १०० ॥ सौम्योऽरि
वेदा ॥ ४६ ॥ गुरुव्योमाद्यैः ॥ ८० ॥ भृगुजोपमेरिपुरसे ॥ ६६ ॥ केडेत्रशिषोनिते ॥ लघुसंश
सिजचपंगजरसैः ॥ ६८३ ॥ कायारिपु ॥ ६९० ॥ भार्गवेतस्मिंचक्र ॥ १२०० ॥ विसोधितेसमुद
पंयांतिकवंधेचरा ॥ १७ ॥ पलप्रभातत्व ॥ ३५ ॥ हतारखवाकैः ॥ ९०० ॥ पुक्तस्फुगकोतसमा
पदास्यात् ॥ ज्याम्यांनदास्याद्दपेनिसांतेसुनेसास्तस्यसुरारिहन्त ॥ १८ ॥ पुष्ट्यमन्ना ॥ ८
हृततत्रदि ॥ १० ॥ ग्मिलघ्नकुवंगुकदलित ॥ २ ॥ सुचक्रात् ॥ २००० ॥ शंसोध्यतेरुहविप्रदि
ण्यांनक्षत्रगोरसिमतैश्चतइत् ॥ १९ ॥ पातकुर्वीच्छोधिगुराकृत ॥ ४ ॥ घादसा ॥ १० ॥ प्रमु

॥ भास्व ॥

॥ १० ॥

तंभगरो ॥ २००० ॥ त्वजेतु एरुसदावक्रः गतिस्फुटस्या प्रादिस्तु चक्रार्द्ध ॥ १२५० ॥ पुन
लुपुच्छ ॥ २० ॥ भकुवंकुवकेन्द्रस्याच्छिप्रकेन्द्रस्फुटग्रहं ॥ कुवशिष्टांतरं कुर्यात्स्फुटभुः
क्तिविभाजितं ॥ लज्जफलं दिनादिस्थादधिके कुवकेन्द्रके ॥ धनं दिनगरो कुर्याद्विरांसी
धुधिके पुन ॥ २१ ॥ यहैवत्रे गते मार्गे पाते चक्रार्द्ध ॥ ६०० ॥ के तथा ॥ अस्तोदये धनर्णस्याश्र
त्येपे पुण चक्रके ॥ १२०० ॥ २२ ॥ कुवकौचक्र ॥ १२०० ॥ चक्रार्द्ध ॥ ६०० ॥ उदयास्तकुवौ तथा
वक्रमार्गकुवौ जयौ कथितौ कुवकेन्द्रकौ ॥ २३ ॥ माने मेघे ॥ १२ ॥ १ ॥ गतचन्द्रसततदक्षिणो
त्ततं ॥ अन्ये ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ श्वोत्तरागस्यात्समस्तं वृषकुंभयो ॥ २ ॥

॥ एतत् ॥

॥ ५० ॥

॥ ११ ॥ विज्वरं स्यात्समेचं चंद्रं भिक्षं मरणं भयं ॥ इति रोग भय चैव शुभं भिक्षं यो ज्ञातरो न तम् ॥
॥ ६ ॥ इति श्रासदानाद्याचार्य विरचिते भास्वति ह्कारो ग्रहस्फुटो धिकार चतुर्थोऽध्यायः ॥
॥ ४ ॥ रूपाक्षिवेदै ॥ ४२९ ॥ रहितं रूपाक्षिवेदै ॥ ३९०० ॥ स्वत्या स्वकिपा
ई पुतादि ॥ २ ॥ भक्ता सैते ॥ १०० ॥ नलजा अयनां शकासु ॥ १ ॥ छुवन्दतो रगास्तु ॥ १८७ ॥ भिर्गजासु
॥ १७८ ॥ स्वत्यैर्गतिष्योत्तरदक्षिणोत्तरतः खरामै ॥ ३० ॥ कमसम्बदद्यात्सार्द्ध ॥ ४५ ॥ सषह्न ॥ ३
५ ॥ चदलं ॥ ११ ॥ चरार्द्ध ॥ २ ॥ पलप्रभा घुंसरषट्पमा ॥ २६५ ॥ प्रंपचेष्ट ॥ १५ ॥ तोषो ज्यमृगां च गोला
त् ॥ अर्हदलं सप्तमतो निस्तार्द्धतयौ गतैष्योत्तरितं न तं च ॥ ३ ॥ षट् ॥ ६ ॥ छुचरार्द्धदस ॥ १० ॥ भा

॥ भा स्व ॥

॥ ११ ॥

भागहीनर्याम्याहिरां मां ॥ ३ ॥ शयुतंदसा ॥ १० ॥ तं ॥ तदक्षि ॥ २ ॥ हिनाक्षि ॥ २ ॥ विपुक्तयुक्तं
भानोरुदग्दक्षिणतप्रभास्यात् ॥ ४ ॥ द्वायादंस ॥ १० ॥ द्यासत ॥ १०० ॥ सयुताचमध्यप्रभो
नाभवतिहसंकु ॥ शता ॥ १० ॥ हताहर्दलतस्तदाप्तंमहर्गतैष्योद्यटिकाल ॥ ५ ॥ खवेदु ॥ १०० ॥
निष्ठादिदलाकृतैष्योनाद्याप्रमध्येषमयासमेतं ॥ सतो ॥ १०० ॥ नितंतदस ॥ १० ॥ भिर्विभक्तं
लज्जागुलाद्याभवतिप्रिताभा ॥ ६ ॥ तरणाद्योममध्यस्थंनक्षत्रैचनगो ॥ ७ ॥ नितं ॥ नस्व ॥ २० ॥
घुनवं ॥ ९ ॥ भिलंजंरात्रौचगतताडिका ॥ ७ ॥ मध्याकाशेमृगेमूलेनवमोदयमादिसेत् ॥
अनैमुर्द्धिगतैवाच्य अह्नमस्यादितिस्मृतं ॥ ८ ॥ लग्नंतुसुर्योदयत ॥ प्रसाध्यंखमोदयैसे

॥ राम ॥

॥ ११ ॥

रिदिनानुपातात् ॥ संगुणेष्वप्या ॥ ६० ॥ पनसंज्ञकांसागजै ॥ ८ ॥ विभज्य हनरवौ प्रजो ज्य ॥ ९ ॥
सराष्ट्रिपुमै ॥ २२५ ॥ विभजोत्पलञ्जनकांशिपेत्स्वदयकां नृकपादिन् ॥ संगुणभोग्योदय
केनशेषं विभज्येपचाष्ट्रियमै ॥ २२५ ॥ प्रलञ्जं ॥ १० ॥ भुक्तोदयैकोसहितं प्रकुर्यात् षष्ठाः
॥ ६० ॥ विभज्याप्तफलेन पुक्ता ॥ सूर्यादयाद्याद्यटिका प्रकुर्यात् षष्ठा ॥ ६० ॥ धिकानरवर
सै ॥ ६० ॥ पुगुणय ॥ ११ ॥ ततकुर्यादिनुदयाप्रसोर्धभुक्तांकनुत्पोदपक्षां विधेयो ॥ सेषं स्व
वस्था ॥ ३० ॥ दिगुणां विज्यभोग्योदपाप्तं भवति एतत्तन् ॥ १२ ॥ लग्ने प्रज्योत्पं रस ॥ ६ ॥ भवित
नंयामित्र ॥ ७ ॥ संज्ञकथितो मुनिर्धै ॥ लंकोदयै पूर्वपदेव साध्यं षष्ठा ॥ ६० ॥ विवज्येति

॥ भास्व ॥

॥ १२ ॥

तियथोदितं तत् ॥ १३ ॥ स्वात्पाके पातेन तेन हीनं पुक्ते प्रकुर्यादपरेन तेन ॥ तथ्यति पत्रन
तं प्रजो ज्यं षष्टि ॥ ६ ॥ पुनः स्तत्र न तं विसोध ॥ १४ ॥ लंकोदये स्तत्र पुनः प्रसाध्यं मध्यं विलग्नं
प्रथमोक्तमार्गे ॥ मध्यविलग्नैरस ॥ ६ ॥ भप्रज्यो ज्यं पाताल लग्नं मुनयो वदन्ति ॥ १५ ॥ लग्नच
तुर्था च सुखकलत्रां मध्याच्च पामित्रकमं विसोधं ॥ खभ विलग्नं च विसोधशेषं त्र्य ॥ ३ ॥
शंस्वकिपकमतप्रज्यो ज्य ॥ १६ ॥ भावद्वयो र्योगदत्त ॥ २ ॥ तुसंधितत्रस्थितां शादफलोय
हेड ॥ चंडाश्वि ॥ २१ ॥ निघ्रापलमाहि ॥ २ ॥ ताच लंकावधिस्थादिहृदक्षिराक्षि ॥ १७ ॥
दिगु ॥ २ ॥ रांविपुवच्छायाविभज्यत्कमशस्त्रिधा ॥ अर्का ॥ १२ ॥ ह ॥ १५ ॥ प्रकुरौ ॥ ३६ ॥

॥ राम ॥

॥ १२ ॥

तप्तं च रसं राविनादिका ॥ १८ ॥ वस्वक्षौ ॥ २० ८ ॥ नन्दनन्दाधि ॥ २९ ॥ विरदाध्व ॥ ३२ ॥
क्रमोत्क्रमात् ॥ चरखरोणेनितं युक्तविनाद्योजातकोदयात् ॥ १९ ॥ इति श्रीसदानन्दाचार्य
विरचिते भास्वतिहकारणे स्विप्रह्लाधिकार पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ द्वि ॥ २ ॥ प्रोविपर्वक
तात् ॥ ४ ॥ पुत्रोदिग्नि ॥ २ ॥ त्तमोद्य ॥ ८ ॥ शुदिनाकुवाद्यं ॥ तमोपुताकातखरवमा ॥ २७०० ॥
प्रसौम्यायाम्यासुरेत्यास्वदसां ॥ १० ॥ सहीन ॥ १ ॥ मानहिमासोर्गतिरग्नि ॥ ३ ॥ हिनादि
घ्रा ॥ १० ॥ श्वतु ॥ ४ ॥ भिर्ष्वतमप्रमानं ॥ तर्चोगतोर्द्ध ॥ सर्वर्जितचयाशः सुधासोस्फुटपर्वसं
धौ ॥ २ ॥ स्वद्यादसां ॥ १२ ॥ स्वनितमार्कमानस्वजाति ॥ २२ ॥ भागोनितमिन्द्रमानम् ॥ त्रि ॥ ३ ॥

॥ भास्व ॥

॥ १३ ॥

प्रेतु भोग्या ह नखा ॥ २० ॥ न्वितो को भाग्याग्नि ॥ ३ ॥ भागेन विवर्जितो गो ॥ ३ ॥ स्थि च्चर्द्र
मगा ॥ ६ ॥ हतमिंडु स्वं उख पंच ॥ ५० ॥ पुक्खरा विषं रिड तं च ॥ हिनं धनं पर्वणि शित
रस्मे स्य स्ये थ मुक्ति श्वत दिष्ट कालं ॥ ४ ॥ या सा वि सति ॥ २० ॥ गुणिता स्फुटानि जमानेन
भाजितं विस्व ॥ ५ ॥ या हे नखरा ड्ड सं ॥ ६ ॥ संगुणा च खं पंच ॥ ५० ॥ पुक्खरा फलं
विमर्द ॥ हीन धनं पर्वणि च ड्ड भात्यो निमित्त नो भिल न नादिका स्पू ॥ ६ ॥ वि ॥ घा द
स्ते ॥ १३ ॥ च या मित्रे ॥ ७ ॥ समरा सि ॥ ९ ॥ गते थ वा ॥ तथा ष ष ॥ ६ ॥ ए ॥ ८ ॥ के चैव ग्रह
रा चंड सूर्य यो ॥ ७ ॥ इति श्री सदा रु विरं चिरं चिते भास्वति हृदर रणे च ड्ड ग्रहा वि

र मः

कारषष्टमोऽध्यायो ॥ ६ ॥ न तादस ॥ १० ॥ प्राजिन ॥ २४ ॥ एकनाम तत्त्वं न तेन युतं न तं च ॥ त
त्वाक ॥ २० ॥ निष्ठो न युतस्य भान्वो प्राविषति चोच्च सरः प्रसाध्य ॥ १ ॥ पृथक् शता ॥ १०० ॥ साधिक
रू ॥ ११ ॥ भक्त्यास्तदक्षि योगांतरितं नति स्यात् ॥ तच्च वनदिग् ॥ १० ॥ गुणितं गुणाप्तं ॥ ३ ॥ हिनं
नं प्राक्यो रवसंशो ॥ २ ॥ तत्तत्तमसं प्रयुता शरश्च सरावनन्तरं युक्तस्फुट स्यात् ॥ मानं खे भोपि
पुतांगनन्दा ॥ २६ ॥ तज्जाहको धस्थितयवचडा ॥ ३ ॥ प्रासाश्चतु ॥ ४ ॥ घासवितुषरामै ॥ ३० ॥
सैक्यलप्ते स्थिति मर्दनाद् ॥ इति हसुर्याग्रहो विसेष शेषस्तु च प्रग्रहणाद्विचिन्त्य ॥ ४ ॥
तत्त्वम् न सौम्य मृणां विधायः याम्यां धनपर्वणि तिजमान्वो ॥ स्थित्येव के हानि युतं प्रकुर्यात्

भास्व

१४

स्वर्गोपमूर्तिश्च भवेदित्या ॥ ५ ॥ इति श्री सदानन्दाचार्यविरचिते भास्वति ह्कारणोऽनु-
प्यग्रहणाधिकारसप्तमोऽध्यायः ॥ ४९०० ॥ धिकभास्वरस्य प्राग्वच्चक्राः ॥
॥ २००० ॥ प्रदिशसंख्यं तत्वाह ॥ ६० ॥ भागाश्च कृतिश्च भ्रं सोऽर्पथादिसंयत्तमितः खरासो
॥ १ ॥ मध्याह्निरिनात्याकरतस्तु सौम्या न तस्या दथ त कृतिश्च ॥ कृत्योस्तु लोपान्येदि सोऽक
मेतैयोगात्तरं वावल नारमिंदो ॥ २ ॥ मानसरादेस्व न तस्य पंच ॥ ५ ॥ भागो नदिके सषह तांगुला
द्या ॥ चंडोर्कमानांगुलसंगुणा साख्यं प्रांग ॥ ७०० ॥ भक्तावलगांगुलानि ॥ ३ ॥ चंडार्कपोदि
सम ॥ ५ ॥ लम्बसव्यापसव्येवल नायश्च ॥ मध्याह्नदकदक्षिणातः शरांतात्तमोर्द्धश्च नरविन्द

राम

१४

खण्डं ॥ ४ ॥ बलनाशानुस्वदेयंतद्विधैकतायादि ॥ भेदप्रत्यंमुखदेयंमंदोमान्वोविपर्य
यात् ॥ ५ ॥ बलनाशानुत्तः श्रुतंमध्यविदुषवेसयत् ॥ मध्याश्रयेणविशेयंबलनाभि
पुरवालयेत् ॥ ६ ॥ विक्षेपायातिषेष्टतयाहकार्ज्ञतेनयत् ॥ ग्राह्यवृत्तंसमाक्रान्तततु
स्तंतमसामवेत् ॥ ७ ॥ स्थित्यर्घ्निघोरस ॥ ८ ॥ वेद ॥ ४ ॥ भक्तौमानांगुलैषापरयोस्तदग्रात् ॥ स्प
सोथमोक्षेस्वमृतंयथावन्निमिलनोन्मिलनकेभवन्ति ॥ ८ ॥ यासागुलंप्रह्नहृतस्थित्यर्घ्न
विभाजितं ॥ लघ्वंछन्नांगुलेयासेमोक्षयासातरंतत ॥ ९ ॥ खखावेदा ॥ ४०० ॥ दगतेयुगादेदि
योक्तितश्रीपुरुषोत्तमस्य ॥ श्रीमान्सतानरुईतिदमाह ॥ सरस्वतिशंकरपोस्तनुज ॥ १० ॥

भास्व॥ इति श्रीसदानन्दाचार्यविरचिते भास्वतिह्करणे परिलेखाधिकार अस्तमेध्याय ॥ ८ ॥

॥ १५ ॥ इदं भास्वतिसमाप्तं ॥ शुभम् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥



रमः
१५



